के.रि.पु.बल
शौर्यगाथाएँ
Vol.12
धीर धर्मेन्द्र
सत्य घटनाओं पर आधारित
HEMANT ISHAN

वीरता का पुलिस पदक

वरीयता क्रम में वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक के बाद आने वाला वीरता का पुलिस पदक देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले वीर पुलिस कर्मियों को प्रदान किया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

के.रि.पु.बल शौर्यगाथाएँ

धीर धर्मेन्द्र

CENTRAL RESERVE POLICE FORCE

प्रस्तुतिः संजय गुप्ता
लेखनः नितिन मिश्रा
चित्रांकनः हेमंत कुमार
स्याहीकारः विनोद कुमार
आवरणः हेमंत कुमार, ईशान त्रिवेदी
रंग सज्जाः सुनील दस्तुरिया
शब्दांकनः मंदार गंगेले
संपादनः मनीष गुप्ता

Published By: Raj Comics (an imprint of Raja Pocket Books) on behalf of Directorate General C.R.P.F.

Raj Comics
330/1, Burari
Delhi-110084
www.rajcomics.com
Ph. 01127611410

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed By: Prince Print Process

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopy, recording or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher- For permission requests write to the publisher addressed "Attention: Permissions Coordinator" at the address below.

Inspector General (Operations)
Central Reserve Police Force
Email: igops@crpf.gov.in

कॉन्स्टेबल धर्मेन्द्र रॉय सी.आर.पी.एफ. की कोबरा यूनिट के जांबाज सिपाही।
धर्मेन्द्र का जन्म असम के एक छोटे से गांव में हुआ था।
बचपन से ही धर्मेन्द्र बेहद शर्मीले थे।
धर्मेन्द्र का दिल पढ़ाई से ज्यादा खेल-कूद में लगता था। दुर्गम जंगलों में अपने दोस्तों के साथ लुका-छुपी खेलना उनका प्रिय शगल था।
कहां छुप गया वह?
हाहाहा!! मैं जीत गया, तुम लोग मुझे नहीं ढूंढ पाए।
तुम हमेशा इतनी दुर्गम जगहों पर छुपते हो जहां तक कोई नहीं पहुंच पाता।
क्रिकेट और फुटबॉल खेलना भी धर्मेन्द्र को विशेष रूप से पसंद था।

धर्मेन्द्र धीरे-धीरे बड़े हो रहे थे, किसी अन्य किशोर की तरह ही उनका जीवन भी सादगी से भरा हुआ था।
यह वह समय था जब पूरा असम उल्फा आतंकवादियों के प्रकोप की आग से झुलस रहा था।
एक-एक घर छान मारो।
बाहर निकालो हर घर से किशोरों को।
उल्फा आतंकियों द्वारा असम के विभिन्न गावों से नवयुवकों और किशोरों को भ्रमित कर के ले जाना और उन्हें ट्रेनिंग देकर आतंकवादी बनाना उन दिनों आम बात थी।
नहीं! छोड़ दो हमारे बच्चों को।
हिन्दुस्तान की सरकार हमारी दुश्मन है, हिन्दुस्तान के खिलाफ आजादी की हमारी लड़ाई में ये लड़के हमारे सिपाही बनेंगे।
हमें अपनी जमीन, अपने अधिकार के लिए लड़ना होगा ये नौजवान ही हमारी इस जंग को आगे बढ़ाएंगे।
नहीं! मैं तुम्हारी तरह आतंकवादी कभी नहीं बनूंगा। मैं पढ़ लिख कर डॉक्टर बनना चाहतां हूं! इस देश की और अपने गांव के लोगों की सेवा करना चाहता हूं!
खामोश लड़के! पहले अपने लोगों की बेहतरी के बारे में सोचा। इस देश ने हमारे लिए क्या किया है?
अगर हमारे सारे युवा यहां से निकल कर हिन्दुस्तान की सेवा में लग जाएंगे तो हमारे बुजुर्गों, हमारी जमीन, हमारी सभ्यता को कौन देखेगा?
क्या तुमने कभी सोचा कि तुम्हारे जाने के बाद तुम्हारे गांव, तुम्हारे बूढ़े मां-बाप का क्या होगा?

हिन्दुस्तानी सरकार ना तुम्हें रोजगार देती है ना तुम्हारे लोगों को कोई सुविधा मुहैया कराती है। हमारे किशोर हिन्दुस्तान में जहां भी जाते हैं लोग उन्हें हेय दृष्टि का पात्र बनाते हैं।
हमारे लिए काम करो, हम तुम्हें बहुत सारा पैसा देंगे, तुम लोग अपने घरवालों का खयाल रख पाओगे।
ये लोग ठीक कह रहे हैं, हमें इनके साथ जाना चाहिए।
इन घटनाओं ने धर्मेन्द्र की सोच और उनके जीवन दोनों को ही एक नया मोड़ दिया।
ये लोग भोले-भाले किशोरों को पथ भ्रमित करके आतंकी बना रहे हैं, उनका भविष्य, उनका जीवन बर्बाद कर रहे हैं। अगर इन्हें रोकना है तो पहले मुझे खुद को किसी योग्य बनाना होगा।
धर्मेन्द्र ने अपने इस निश्चय से अपने माता-पिता को अवगत कराया।
मां-पिताजी, मैं इस देश का सिपाही बनकर इन आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब देना चाहता हूं ताकि असम के युवाओं का भविष्य आतंक की दलदल में गर्त होने से बच सके।
हमें तुम पर गर्व है बेटा।
अपने दृढ़ निश्चय को यथार्थ में बदलने के लिए धर्मेन्द्र ने जी-तोड़ मेहनत करके अपनी शिक्षा संपन्न की...
...और सी.आर.पी.एफ. में भर्ती हो गए।
सी.आर.पी.एफ. में भर्ती के पश्चात धर्मेन्द्र विभिन्न अभियानों का हिस्सा रहे। तत्पश्चात वे सी.आर.पी.एफ.कोबरा बटालियन में चयनित हुए।

29 मई 2012, रात्रि 8:30 बजे।

निर्देशानुसार टीम्स छोटी टुकड़ियों में बंटकर अपने मिशन पर रवाना हुईं।
इन टुकड़ियों का कार्य था उन सभी संदिग्ध क्षेत्रों, जहां उल्फा मिलिटेंट्स के छुपे होने की संभावना थी उनका संपर्क बाकी क्षेत्रों से काटकर आतंकियों के लिए बच निकलने के सभी मार्गों को बंद कर देना।
एक टुकड़ी का नेतृत्व खुद गुरुचरण कर रहे थे।
दूसरी टुकड़ियों के साथ असम पुलिस के कमांडोज भी सम्मिलित थे।
उतार-चढ़ाव से भरे उस पहाड़ी क्षेत्र पर घर एक-दूसरे से काफी दूरी पर स्थित थे।

कोबरा जवानों के लिए दूरियों पर बसे हुए इन घरों का निरिक्षण करना बेहद दुष्कर कार्य था।

जब गुरुचरण और धर्मेन्द्र टीम के साथ एक पहाड़ी टीले के नीचे से गुजर रहे थे।
ठीक उसी समय योजनाबद्ध तरीके से पहाड़ी टीले के ऊपर छुपे हुई उल्फा आतंकियों ने अपने स्वचालित हथियारों से उन पर ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी।

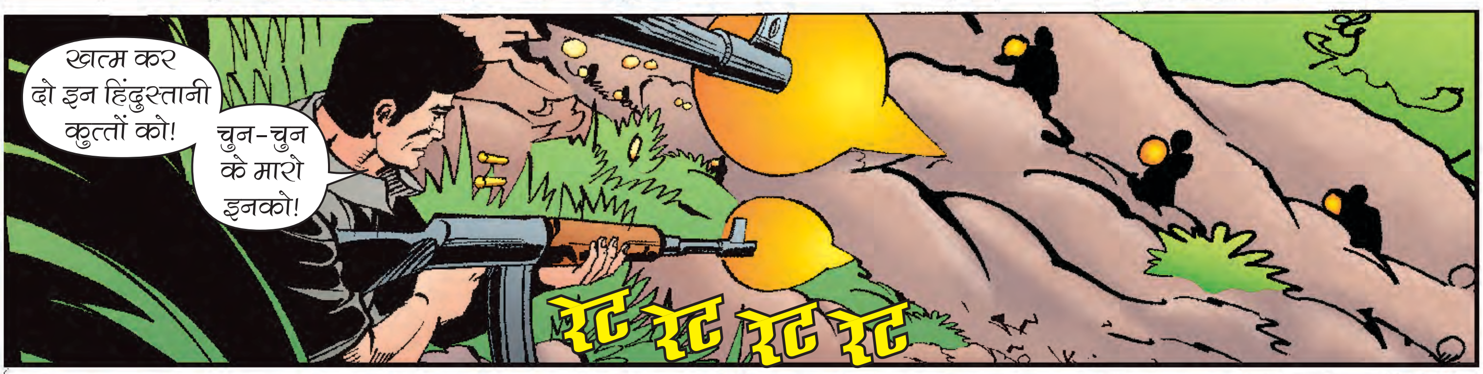
खत्म कर दो इन हिंदुस्तानी कुत्तों को!
चुन-चुन के मारो इनको!
रेट रेट रेट रेट

कोबरा टीम ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया।

दोनों तरफ से जबरदस्त गोलियों की बौछार हो रही थी।
गुरुचरण और धर्मेन्द्र अपनी टीम का हौसला बढ़ा रहे थे।
रेट रेट रेट
मासूम बच्चों और किशोरों को भ्रमित करके आतंकवाद की गर्त में धकेल देते हो तुम नीच आतंकी।
तुम्हारा तो वह हाल करेंगे जो बाकी आतंकियों के लिए सबक होगा कि देश की युवा पीढ़ी की ओर आंखें टेढ़ी करने वालों का सी.आर.पी.एफ. क्या हश्र करती है।
गुरुचरण और धर्मेन्द्र रॉय कोबरा टीम का हौसला बढ़ाते हुए उनका नेतृत्व कर रहे थे।
रेट रेट रेट रेट
अपने जांबाजों का बुलंद हौसला देखकर कोबरा टीम का जज्बा भी दोगुना हो गया।
रेट रेट
कोबरा टीम के इस जज्बे के सामने टिक सके इतना जिगर किसी आतंकी के पास नहीं था।
अगर इनसे मुकाबले में उलझेंगे तो यहां से हमारे शरीर नहीं शरीर से आत्मा ही बाहर निकल पाएगी।

आतंकी समझ चुके थे कि पलायन के अतिरिक्त और कोई भी दूसरी नीति उनके काम नहीं आने वाली थी।
जान प्यारी है तो मैदान छोड़कर भागना होगा हमें।
जान बचाने के लिए आतंकियों को टीले से नीचे छलांग लगानी पड़ी।
भागो!!
अपनी जान की लेशमात्र भी परवाह ना करते हुए धर्मेन्द्र और गुरुचरण ने पलायन करते आतंकियों का पीछा करना शुरू किया।
भागते कहां हो कायरों?
रुक जाओ गद्दारों! आज यहां से जिंदा बच कर नहीं जा सकते तुम!
रेट रेट रेट
हम्फ! ये दोनों तो पीछा ही नहीं छोड़ रहे।
किस मिटटी के बने हैं ये सी.आर.पी. एफ. वाले?
आतंकियों ने दो ग्रेनेड कोबरा टीम की ओर उछाल दिए।
हमारे पीछे आओगे तो सिर्फ मौत पाओगे!!
सावधान हो जाइए साहब! यह लोग ग्रेनेड फेंक रहे हैं।

धमाका जबरदस्त था।
बूम
गुरुचरण और उनकी टीम ग्रेनेड के धमाके से बाल-बाल बची।
जल्दी करो कमांडोज।
धर्मेन्द्र ने आतंकियों का पीछा नहीं छोड़ा और उन पर फायरिंग करते रहे।
तुम नीच कीड़ों को खत्म कर के अपने देश के आने वाले भविष्य को बचाने के लिए ही मैं फोर्स में आया हूं। अपने वतन, अपनी मातृभूमि के भविष्य को तुम्हारे हाथों गर्त नहीं होने दूंगा।
भागते हुए आतंकियों और धर्मेन्द्र के बीच ताबड़तोड़ क्रॉस फायरिंग हुई
रेट रेट रेट
तड़ तड़ तड़

धर्मेन्द्र की जांबाजी और हिम्मत ने उसके दुश्मनों को भी हतप्रभ कर दिया था।
बहुत दुःसाहसी है यह जवान, अपनी जान की जरा भी परवाह नहीं है इसे।
अपनी जान की परवाह करो और भागो यहां से।
धर्मेंद्र की ताबड़तोड़ फायरिंग ने...
...आतंकियों को बुरी तरह घायल कर दिया।
धर्मेन्द्र द्वारा की जा रही फायरिंग में बुरी तरह घायल हुए आतंकी किसी तरह खुद को बचाते हुए नागालैंड सीमाक्षेत्र तक पहुंच गए।
आह
हम्फ
यह क्षेत्र ऊंचे झाड़-झंखाड़ और गहन जंगल से भरा हुआ था।
अगर हम किसी तरह सीमा पार कर गए तो बच जाएंगे।

धर्मेन्द्र आतंकियों की चाल समझ रहे थे।
ये लोग घने जंगलों की ओर भाग रहे हैं, अगर ये जंगल में प्रवेश कर गए तो इन्हें पकड़ना असंभव हो जाएगा।
धर्मेन्द्र के भरसक प्रयासों के बावजूद आतंकी गहन जंगल में लोप हो गए।
ओह! इतने गहन जंगल में जाने किस ओर भागे हैं वे आतंकी।
सर्च पार्टी ने उस पूरे वन क्षेत्र की कॉम्बिंग शुरू की।
कॉम्बिंग के दौरान सर्च टीम को एक ए.के. 56 के साथ एक मैगजीन और 42 राउंड बुलेट्स, 2 हैंड ग्रेनेड्स, 1 पिस्टल मैगजीन, 1 आई.ई.डी. और 10 कारतूस बरामद हुए।

अगले दिन असम-नागालैंड बॉर्डर स्थित एक गांव से पुलिस सर्च पार्टी ने हिरेन गोगोई उर्फ रॉबिन चेतिया नामक उल्फा आतंकी को बुरी तरह जख्मी अवस्था में गिरफ्तार किया।
आतंकी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया, वहां घायल आतंकी ने अपना बयान दिया।
आह..प्र...दीप गोगोई, रूपांतर काकोटी, अध्रुमन बरुआ, फणीन्द्र मोरन हमारे साथ ही थे जब सी.आर.पी.एफ. ने हम पर हमला किया। इनमें से दो बुरी तरह घायल हुए थे...उनका बचना... आह... मुश्किल है।
इस पूरे ऑपरेशन में सहायक कमांडेंट गुरुचरण कलिन्दिया और कांस्टेबल धर्मेन्द्र रॉय ने अदम्य साहस का परिचय दिया।
तुमने बहुत बहादुरी दिखाई धर्मेन्द्र, तुम अकेले ही बिना अपनी जान की परवाह किए हुए उन आतंकियों के पीछे चले गए।
आपके प्रोत्साहन और नेतृत्व के बिना यह संभव नहीं हो पाता सर! मुझे अफसोस सिर्फ इस बात का है कि उन सभी आतंकियों को मैं खत्म नहीं कर पाया।
लेकिन खुशी इस बात की है कि मैंने अपनी मातृभूमि से जो वादा किया था उसे निभाने में मैं सफल रहा।

समाप्त!

20/08/2013, Baljek Airport, West Garo hills

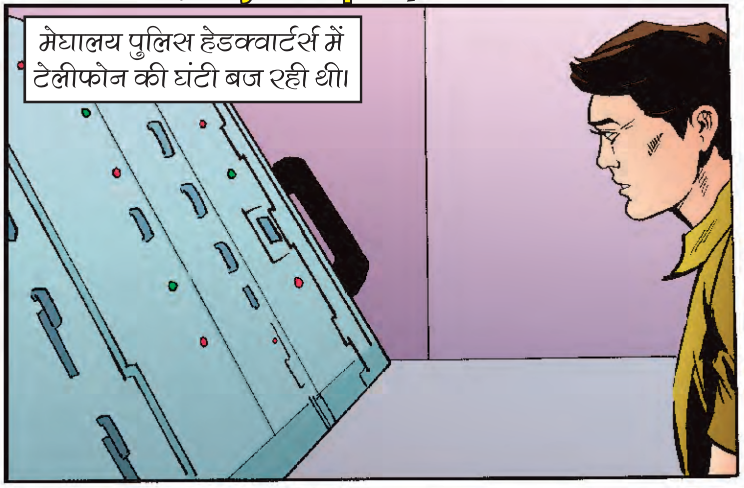

मीटिंग का मुद्दा बेहद गंभीर था।
विश्वस्त सूत्रों के सौजन्य से हमें यह अत्यंत खुफिया और पक्की खबर मिली है कि प्रतिबंधित अलगाववादी संगठन G.N.L.A. का प्रमुख कमांडर सोहन डी. शिरा कहां छुपा हुआ है।
ओह! क्या यह खबर पक्की है?
खबर सौ फीसदी पक्की है। सोहन G.N.L.A. के कुछ अन्य प्रमुख अधिकारियों के साथ मेघायल के ईस्ट गारो हिल्स के घने जंगलों में मौजूद है।
फिर तो हमें फौरन हरकत में आना चाहिए।
बिलकुल! इसीलिए यह आपातकालीन मीटिंग बुलाई गई है। मेघालय पुलिस को प्राप्त सूचना के अनुसार ईस्ट गारो हिल्स के घने बीहड़ जंगलों में G.N.L.A. का कैंप है जहां यह अलगाववादी लीडर मौजूद हैं।
इनके साथ-साथ कैंप में लगभग बीस के करीब जूनियर कैडर भी मौजूद हैं।
फिर तो हमें बेहद सावधानी से इन्हें पकड़ने का जाल बिछाना होगा।
घने बीहड़ जंगलों का इलाका इन अलगाववादियों के लिए उनके घर जैसा है। वहां के चप्पे-चप्पे से यह लोग वाकिफ हैं, यह उस घने जंगल में इतनी आसानी से गायब हो सकते हैं जैसे अंधेरे में छाया।
मैं आपकी बात से बिलकुल सहमत हूं। इन जंगलों से इन आतंकियों को पकड़ना सांप को उसके बिल में हाथ डालकर पकड़ने के सामान है।
इसीलिए यह एक जॉइंट ऑपरेशन होगा जिसे पुलिस की SWAT टीम C.R.P.F. की C.O.B.R.A. टीम के साथ मिलकर अंजाम देगी।
C.O.B.R.A. टीम ऐसे ही बीहड़ और दुर्गम स्थानों पर ऐसे दुर्दांत आतंकियों का शिकार करने के लिए विशेष रूप से ट्रेंड हैं। C.O.B.R.A. यूनिट ऐसे ही ऑपरेशन्स को अंजाम देने के लिए मेघालय में तैनात की गई है!

21/08/2013, Baljek Airport West Garo hills-
मेघालय पुलिस की S.W.A.T. और C.R.P.F. की C.O.B.R.A. यूनिट की संयुक्त टीम्स बल्जेक एअरपोर्ट एरिया पर उपस्थित थीं।
दोनों टीमों को संयुक्त रूप से ऑपरेशन सम्बंधित निर्देश दिए गए।
स्वॉट और कोबरा टीम्स को मिलकर ईस्ट गारो हिल्स के घने बीहड़ जंगलों में G.N.L.A. का कैंप तबाह करना है और उनके अलगाववादी प्रमुखों को जीवित या मृत पकड़ना है।
पुलिस प्रमुख और कोबरा टीम कमांडेंट दोनों टीम्स को पूरा प्लान समझाते चले गए।
21/08/2013 20:30 hrs, Durama hills, William Nagar.
संयुक्त टीमें रात्री साढ़े दस बजे विलियम नगर के दुरमा हिल रेंज स्थित बीहड़ जंगलों में अपने ऑपरेशन का आरम्भ कर रही थी।
कोबरा टीम का संचालन असिस्टेंट कमांडेंट कुलदीप दहिया कर रहे थे।
कांस्टेबल धर्मेन्द्र रॉय भी कोबरा टीम में शामिल थे।

यह एक बेहद दुर्गम पहाड़ी जंगल क्षेत्र था जहां किसी भी साधारण व्यक्ति का पहुंचना लगभग असंभव था।
कदम-कदम पर मौत मुंह फाड़े खड़ी थी।
बेहद सावधानी से आगे बढ़ना साथियों। यह पहाड़ी जंगल है।
इन चट्टानों पर नमी के कारण फिसलन भरी काई की परत जमी हुई है। हल्की सी चूक हुई...
“...तो वह जानलेवा साबित हो सकती है।”
ओह
लेकिन सी.आर.पी.एफ. की कोबरा यूनिट को ऐसे ही दुर्गम स्थानों पर ऑपरेट करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है।

सामान्य सुरक्षा बल ऐसी विषम परिस्थितियों में कार्य नहीं कर सकते परन्तु कोबरा यूनिट के जवान का शरीर और मस्तिष्क दोनों ही सामान्य की सीमाओं को पार कर अतिविशिष्ट, अतितीक्ष्ण और किसी भी परिस्थिति से निपटने के लिए अनुभवी हो चुका होता है।
शाबाश जवान। परन्तु आगे और सावधान रहना।
G.P.S. लोकेटर द्वारा टीम उस एरिया की ओर बढ़ रही थी जहां G.N.L.A. कैंप की लोकेशन की सूचना प्राप्त हुई थी।
हम लोग सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, बढ़ते रहो जवानों।
भूख-प्यास, नींद सब कुछ ताक पर रखकर देश के यह सिपाही अपने कर्तव्य पथ पर अडिग चट्टान की तरह डटे हुए थे।
उस बीहड़ में आगे बढ़ते हुए टीम्स को दो दिन बीत गए परन्तु उनकी हिम्मत और साहस बरकरार था।
शाबाश जवानों। बस अब मंजिल से थोड़ी ही दूरी पर हैं हम।

23/08/2013 Time: 08:30hrs

ज्यों-ज्यों टीम ऊपर की ओर बढ़ रही थी खतरा बढ़ता जा रहा था।
हम्फ!
हम्फ!
पहाड़ी चट्टान की गहन झाड़ियों में आतंकियों ने एक अस्थाई मोर्चा बनाया हुआ था, जिसमें उस समय मौजूद आतंकी की नजर कोबरा टीम की गतिविधि पर पड़ गई।
ओह! दुश्मन!
आतंकी ने फौरन टीम पर गोलियों की बौछार कर दी।
रेट रेट रेट
रेट रेट रेट रेट रेट
ओह! दुश्मन ने फायरिंग शुरू कर दी है, उन्हें हमारी उपस्थिति का अंदाजा हो गया है।
कुलदीप व उनकी टीम ने भी दुश्मन के हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया।
अपनी बंदूकों का मुंह खोल दो जवानों, गरजने दो उन्हें, दुश्मन का लहू पीने के बाद ही शांत करना उन्हें। ओपन फायर!!

फायरिंग की आवाज से ऊपर कैंप में मौजूद आतंकी भी सतर्क हो गए।
तड़ तड़ तड़ तड़
गोलीबारी की आवाज!!
जरूर सी.आर.पी.एफ. वाले यहां पहुंच गए हैं, उनके अलावा किसी की हिम्मत नहीं हो सकती यहां तक पहुंचने की।

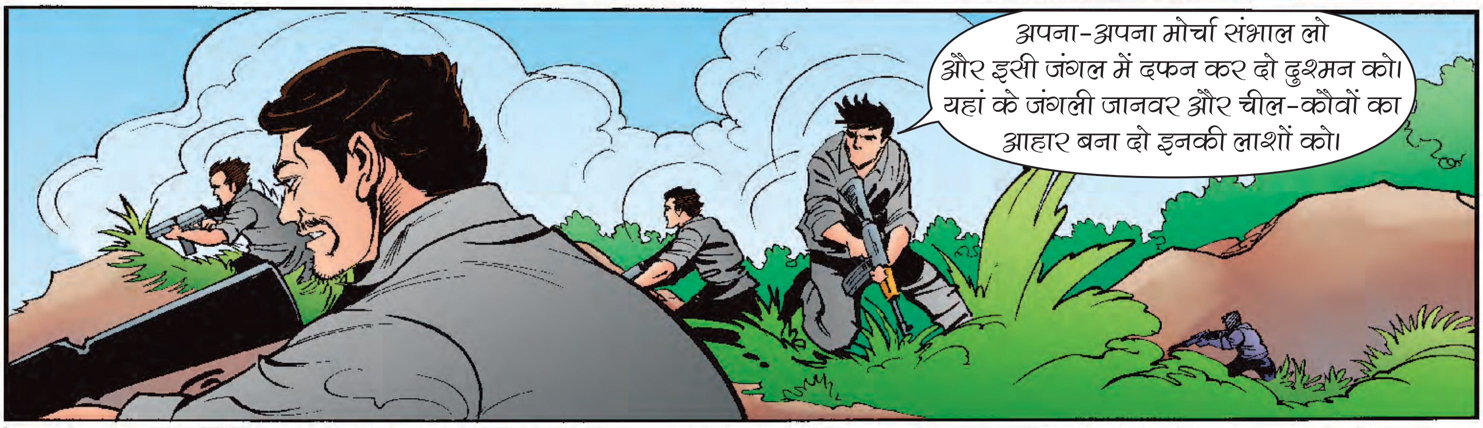
अपना-अपना मोर्चा संभाल लो और इसी जंगल में दफन कर दो दुश्मन को। यहां के जंगली जानवर और चील-कौवों का आहार बना दो इनकी लाशों को।

पोजीशन लेकर आतंकियों ने कोबरा टीम पर फायरिंग आरम्भ की।
तड़
तड़ तड़
तड़
तड़ तड़ तड़

दोनों ओर से घमासान क्रॉस फायरिंग हो रही थी।
तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़ तड़
झाड़ियों, पेड़ों और चट्टानों के पीछे छुपे आतंकी अंधाधुंध फायरिंग कर रहे थे।
तड़ तड़ तड़ तड़
फायरिंग के बीच में आतंकी ग्रेनेड लॉबिंग भी कर रहे थे।
सिर्फ गोलियां इनका कुछ भी नहीं बिगाड़ पाएंगी। ग्रेनेड फेंको इन पर। चीथड़े उड़ा दो इनके!
अंधाधुंध फायरिंग तो यह लोग कर ही रहे थे उस पर से यह ग्रेनेड लॉबिंग।
बूडूम
इनकी मंशा हमें आगे बढ़ने से रोकना है, किसी भी हालत में तुम्हारे कदम रुकने नहीं चाहिए जवानों।

उन धमाकों के बारूद से अधिक विस्फोटक था सी.आर.पी.एफ. जवानों के देश प्रेम का जज्बा। कर्तव्य की पुकार पर गरज उठे थे रण बांकुरे।
बूम
भड़ाम
भड़ाम
ऐसी दिलेरी देखकर दुश्मन का कलेजा भी मुंह को आ गया।
ग्रेनेड के धमाके भी इन्हें नहीं रोक पाए। ये इंसान हैं या भूत!
तड़ तड़ तड़ तड़
उफ!
कुलदीप के नेतृत्व में कोबरा टीम फायर करते हुए आगे बढ़ने की पद्धति अपना रही थी। कोबरा टीम का हमला इतना सुगठित और सुदृढ़ था कि उसके सामने टिकना आतंकियों के लिए नामुमकिन हो रहा था।
आतंकियों को भी इस बात का जल्द ही एहसास हो गया।
नहीं! इनका मुकाबला नहीं कर सकते हम।
मैं तो अपनी जान बचा कर भाग रहा हूं यहां से।

अपने सर पर मौत मंडराते देख कायर आतंकियों के हौसलों की चूलें ढीली हो गईं। मौत बांटने वालों की खुद की जान पर जब बात आई तो कायर चूहों की तरह दुम दबा कर भागने का रास्ता चुना उन्होंने।
एक-एक कर के निकलो तुम लोग यहां से।
सामने की ओर तैनात दो आतंकियों ने भीषण फायरिंग कर के कोबरा टीम को रोकने का प्रयास शुरू किया जिसका फायदा उठाकर बाकी आतंकी भाग सकें।
तड़ तड़
अंधाधुंध फायरिंग करो, इन्हें आगे बढ़ने का मौका ही नहीं मिलना चाहिए।
कुलदीप उनकी मंशा भांप गए थे।
ये दोनों जूनियर आतंकी हैं, अपने लीडरों को भाग निकलने का मौका दे रहे हैं। हमें इनकी योजना विफल करनी होगी।
ऐसा नहीं होगा, सर! हमारी यूनिट इन पर भारी पड़ेगी।
नहीं, धर्मेन्द्र! अगर पूरी यूनिट आगे बढ़ेगी तो इनकी बेतहाशा फायरिंग हमारे जवानों के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। यूनिट यहीं रुकेगी, हम दोनों आगे बढ़ते हैं और इन्हें मार गिराते हैं।
मैं बिलकुल तैयार हूं सर।
कुलदीप और धर्मेन्द्र ने वह दुस्साहसिक कदम उठाया और अपनी जान की लेशमात्र भी परवाह किए बगैर दोनों ने चट्टानी पहाड़ी पर पेट के बल लेटकर आगे सरकना शुरू किया।

बेहद सावधानी से आगे बढ़ना धर्मेन्द्र! दोनों हमलावर हमसे ऊंचाई पर हैं, उनकी गोलियों के लिए हमें अपना निशाना बना लेना कोई मुश्किल काम नहीं होगा पर हमें उन पर अचूक वार करने के लिए सही मौके का इंतजार करना होगा।
मैं बिलकुल तैयार हूं, सर। मौका मिलते ही मेरी गोली इनके सीने के पार होगी।
इन पर निशाना लगाने के लिए हमें अपना फायरिंग एंगल बदलना होगा। तुम रेंगते हुए उस ओर जाओ, मैं इस ओर से आगे बढ़ता हूं।
लगभग 50 मीटर ऊपर बढ़ने के बाद कुलदीप को जिस फायरिंग पोजीशन की तलाश थी वो मिल गई। दो में से एक आतंकी अब उनके सीधे फायरिंग एंगल पर था।
अब आएगा यह ऊंट पहाड़ के नीचे।
तड़ तड़ तड़
आतंकी पर धर्मेन्द्र और कुलदीप दोनों की ओर से दोतरफा फायरिंग हो रही थी जिससे वो बुरी तरह बौखला गया।
खुद को बचाने के लिए आतंकी ने फायरिंग के साथ-साथ एक हैंड ग्रेनेड कुलदीप और धर्मेन्द्र की ओर उछाल दिया।
हिया!!!
कुलदीप ने एन समय पर खतरा भांप लिया।
कवर लो धर्मेन्द्र! यह आतंकी ग्रेनेड दाग रहा है।

कुलदीप और धर्मेन्द्र ने सैकेंड के सौंवे हिस्से में कवर लिया, ग्रेनेड उन से मात्र चंद मीटर की दूरी पर फटा।
काबूम
कुछ देर के लिए धर्मेन्द्र और कुलदीप धुएं के गुबार के कारण दोनों आतंकियों की नजरों से ओझल हो गए।
इसका पूरा फायदा उठाते हुए और कुशाग्र बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन करते हुए धर्मेन्द्र और कुलदीप ने धुएं के गुबार से निकलते हुए आतंकियों पर फायर झोंक दिया।
तड़ तड़
तड़ तड़
तड़ तड़
तड़ तड़
उनकी जबरदस्त फायरिंग ने एक आतंकी को वहीं ढेर कर डाला और दूसरा बुरी तरह घायल हो गया।
दोनों आतंकियों के गिरते ही कोबरा टीम का रास्ता साफ हो गया, बांध तोड़कर बहती नदी के उफान की तरह टीम ने आतंकियों के कैंप पर चढ़ाई कर दी।
हल्ला बोल!!

कैंप की छानबीन करने पर वहां कोबरा जवानों की गोलियों से ढेर हुए G.N.L.A. लीडर बलसरंग टी. संगमा की लाश बरामद हुई।

कैंप से भारी मात्रा में हथियारों का जखीरा और गोला बारूद बरामद हुआ।
असिस्टेंट कमांडेंट कुलदीप दहिया और कांस्टेबल धर्मेन्द्र रॉय की दिलेरी से यह मिशन संभव हो पाया जिन्होंने देशभक्ति और अपने कर्त्तव्य को अपने जीवन से ऊपर रखा।

समाप्त

अलंकरण

मथुरापुर गांव के घने पठाारी क्षेत्र में उल्फा आतंकियों के विरुद्ध अभियान को सी.आर.पी.एफ. की कोबरा बटालियन के जवानों ने अपनी जान की परवाह किए बिना उत्कृष्ट साहस का प्रदर्शन करते हुए सफलतापूर्वक अंजाम दिया। जिसके लिए निम्न जवानों को वीरता के पुलिस पदक द्वारा अलंकृत किया गया।

पुलिस पदक से सम्मानित

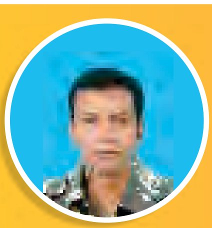

श्री गुरूचरण कालिंदिया
तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट
वर्तमान रैंक : सहायक कमाण्डेंट

श्री धर्मेन्द्र रॉय
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक : कॉन्स्टेबल

दुरमा, वेस्ट गारो हिल्स मेघालय के घने जंगली पर्वतीय क्षेत्र में आतंकियों के विरुद्ध अभियान को सी.आर.पी.एफ. की कोबरा-*210* बटालियन के जवानों ने अपनी जान की परवाह किए बिना अदम्य वीरता का प्रदर्शन करते हुए सफलतापूर्वक अंजाम दिया। जिसके लिए निम्न जवानों को वीरता के पुलिस पदक द्वारा अलंकृत किया गया।

पुलिस पदक से सम्मानित

श्री कुलदीप सिंह दाहिया
तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट
वर्तमान रैंक : सहायक कमाण्डेंट

श्री धर्मेन्द्र रॉय (पुलिस पदक बार एक)
तत्कालीन रैंक : कॉन्स्टेबल
वर्तमान रैंक : कॉन्स्टेबल

श्री हरिभाई पार्थीभाई चौधरी, श्री धर्मेन्द्र रॉय, कॉन्स्टेबल को पुलिस पदक से सम्मानित करते हुए।

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोभाल, श्री कुलदीप दाहिया, सहायक कमांडेंट को पुलिस पदक से सम्मानित करते हुए।

सरदार पोस्ट एक शौर्य गाथा।

9 अप्रैल को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।

वीर भृगुनंदन

यह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गंवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उस स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथियों की भी मदद की।

शूरवीर प्रकाश

एक शौर्य चक्र और छः पुलिस वीरता पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिए कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियां दाहिने कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरूद्ध एक बड़े अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।

जाँबाज इलंगो

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े तमिलनाडू के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आए श्री एस. इलंगो की शौर्य गाथा जिन्हें तीन वीरता पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने साहस व सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरूद्ध कई बड़े अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।

अयोध्या के शूरवीर

5 जुलाई, 2005 स्वचालित रायफल्स, हथगोलों और रॉकेट लाँचर्स से लैस आतंकवादियों को अयोध्या स्थित विवादित स्थल को ध्वस्त करने से रोकना किसी भी सुरक्षा बल के लिए एक दुष्कर कार्य हो सकता था, लेकिन उन आतंकवादियों और विवादित स्थल में मौजूद दर्शनार्थियों के बीच एक अभेद्य सुरक्षा दीवार बन कर खड़े हो गए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) की 33वीं बटालियन के 'डी' कंपनी के जवान, जिन्होंने ना केवल उन सभी आतंकवादियों को मार गिराया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विवादित स्थल और दर्शनार्थियों को लेश मात्र भी क्षति न पहुंचे!

दिलेर दिव्यांशु

नक्सलियों के बीच भय के प्रतीक श्री दिव्यांशु की शौर्य गाथा। जिन्होंने अपने बाल्यकाल में ही केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल का हिस्सा बनने का निर्णय ले लिया था। उप कमाण्डेंट श्री दिव्यांशु अपने अडिग इरादों और दृढ़ निश्चय के बल पर केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में भर्ती हो कर कोबरा कमांडो के रूप में कई दुष्कर ऑपरेशनों को निर्भयता से अपने सफल अंजाम तक पहुंचा कर दो बार पुलिस पदक से सम्मानित हुए।

हॉट स्प्रिंग्स

21 अक्टूबर,1959–लद्दाख के हॉट स्प्रिंग्स क्षेत्र में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने मातृभूमि की रक्षा हेतु अपने साहस और पराक्रम द्वारा चीन की सैनिक टुकड़ी से जमकर लोहा लिया। मातृभूमि की रक्षा का कर्तव्य निभाते हुए देश के 10 बहादुर जवान वीरगति को प्राप्त हुए। देश के उन वीर सपूतों के बलिदान की स्मृति में 21 अक्टूबर को देश के सभी पुलिस बलों द्वारा शहीद स्मृति दिवस के रूप में मनाया जाता है!

अद्वितीय अंजनी

हाथपोखर, बिहार के एक मध्यम वर्गीय परिवार से आए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के सहायक कमाण्डेंट श्री अंजनी कुमार की शौर्य गाथा। श्री अंजनी कुमार ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की कोबरा टीम के सहायक कमाण्डेंट के रूप में अतुलनीय वीरता और अदम्य साहस का परिचय देते हुए नक्सलियों व आतंकियों के खिलाफ अनेक सफल अभियानों को अंजाम दिया, जिसके लिए उन्हें दो बार वीरता के पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।

संसद के प्रहरी

13 दिसम्बर 2001, देश के संविधान के आधार स्तम्भ संसद भवन को नेस्तनाबूद करने के इरादे से फिदायीनों द्वारा किए गए आत्मघाती हमले को सी.आर.पी.एफ. के अधिकारियों व जवानों ने अतुल्य साहस और वीरता का प्रदर्शन करते हुए विफल किया। उन्होंने न केवल सभी आतंकियों को मार गिराया अपितु संसद भवन तथा उसमें मौजूद सांसदों एवं कर्मचारियों पर लेश मात्र भी आंच नहीं आने दी।

बहादुर बिरेश

बसगोइ, तहसील सासनी, हाथरस, उत्तर प्रदेश के छोटे से परिवार में जन्मे श्री बिरेश चौहान के अन्दर देश प्रेम और देशभक्ति की भावना काफी छोटी उम्र से ही विकसित हो गई थी! युवावस्था में कदम रखने के साथ ही श्री बिरेश ने देशभक्ति के जज्बे को देश की रक्षा के प्रति समर्पित करने का निर्णय लिया तथा सी.आर.पी.एफ. में भर्ती होकर उप निरीक्षक का पद हासिल किया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने आतंकियों और नकसलियों के विरुद्ध कई दुष्कर अभियानों को अंजाम दिया। जगरगुण्डा, जिला सुकमा, छत्तीसगढ़ के समीप पूवर्ती गांव में ऐसे ही एक अभियान को उन्होंने विकटतम परिस्थितियों से जूझते हुए अपनी जान की परवाह किए बिना, अदम्य साहस व उत्कृष्ट वीरता का परिचय देकर सफलतापूर्वक पूर्ण किया। उनकी इस वीरता व साहस के लिए उन्हें राष्ट्रपति के वीरता पदक से सम्मानित किया गया।

किशनजी एक आतंक का अंत

पश्चिम बंगाल के जंगल महल क्षेत्र का सबसे बड़ा खतरा कोटेश्वर राव उर्फ किशन जी था। वह *Central committee C.P.I.(Maoist)* का भी प्रमुख और सक्रीय सदस्य था। ओड़िसा, बंगाल और झारखंड राज्यों के नकसल समूह का सबसे शातिर व प्रमुख नेता, जिसका उद्देश्य था अधिक से अधिक पिछड़े हुए युवाओं को गुमराह कर उन्हें माओवाद की दलदल में गर्त करना। कई राज्यों के विभिन्न पिछड़े क्षेत्रों में नकसली गतिविधियों व हमलों में पुलिस को किशनजी की तलाश थी। पुलिस से प्राप्त सूचना के आधार पर श्री नागेन्द्र सिंह व श्री विनोज जोसफ के नेतृत्व में कोबरा 207 बटालियन सी.आर.पी.एफ. और स्थानीय पुलिस ने साझा अभियान की योजना बनाई। अभियान के दौरान हथियारबंद नकसलियों से चारों ओर से घिर चुके सी.आर.पी.एफ. के दल ने अपनी जान की परवाह किये बगैर, वीरता से विकट परिस्थितियों का डटकर सामना करते हुए किशनजी नामक आतंक का सदा के लिए अंत किया।

असम के एक छोटे से गांव में जन्मे श्री धर्मेन्द्र रॉय ने किशोरावस्था में ही देश का सिपाही बनकर आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब देने की ठान ली थी। उनके इस निर्णय के पीछे कारण था आतंकियों द्वारा असम के भोले-भाले किशोरों को पथ भ्रमित करके आतंकी बनाना। देश का सैनिक बनकर उन आतंकवादियों के हाथों असम के युवाओं का भविष्य आतंक की दलदल में गर्त होने से बचाने के लिए ही श्री धर्मेन्द्र ने सी.आर.पी.एफ. में भर्ती होने का दृढ़ निश्चय किया। अपने इस निश्चय को पूरा करते हुए उन्होंने सी.आर.पी.एफ. में भर्ती हो कर आतंकियों के विरूद्ध अनेकों अभियानों को उत्कृष्ट वीरता का परिचय देते हुए सफलता पूर्वक अंजाम दिया। जिसके लिए उन्हें दो बार वीरता के लिए पुलिस पदक से सम्मानित किया गया।